SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

तृतीय लिंग समुदाय के स्वास्थ्य संबंधी संघर्ष का एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

राज मोहन, शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग
सुरेंद्र पांडेय, (Ph.D.), समाजशास्त्र विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
राज मोहन, शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग
सुरेंद्र पांडेय, (Ph.D.), समाजशास्त्र विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची, झारखण्ड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 26/04/2022
Revised on : -----
Accepted on : 03/05/2022
Plagiarism : 02% on 26/04/2022

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Tuesday, April 26, 2022
Statistics: 38 words Plagiarized / 2529 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

तृतीय लिंग समुदाय के स्वस्थ संबंधी संघर्ष का एक समाजशास्त्री विश्लेषण छ राज मोहन (पीएच डी शोधार्थी) डॉ सुरेंद्र पांडेय (निदेशक) स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग रांची विश्विद्यालय, रांची शोध सारांश भारत एक विविधता युक्त समाज है। इन विविधताओं के बावजूद अन्य समुदायों के बीच एक अनोखी समानता एवं एकता भारत में सदैव विद्यमान रही हैं। जिसकी संस्कृति उदार हैं, क्योंकि भारतीय संस्कृति में प्रत्येक जीव जंतुओं को अपनाया गया है और सद व्यवहार की बात कही गई है। पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु समेत हमारा समुदाय शारीरिक व मानसिक दिव्यांगों को अपनाता है, उसका लालन–पालन एवं पोषण करता । किंतु इंसान को मात्र लिंग भेद के कारण तृतीय लिंग (किन्नर) के लोगों को परिवार एवं समाज ने बहिष्कृत कर रखा है। जिनका जीवन अंधकारमय, संघर्षपूर्ण और कठिनाइयों से घिरा रहता है। जिसके कारण

ही यह समुदाय आजीवन जन्म से मृत्यु तक स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का सामना करता रहता है। शब्द कुंजीरू– तृतीयलिंग, स्वास्थ्य और संघर्ष। तृतीयलिंग की अवधारणा– आज भी समाज दो ही लैंगिक संकल्पनाओं में जीता है जबकि इस मानव समाज में प्रारंभ से तीनों लिंगों का वजूद रहा है। जिसका ऐतिहासिक प्रमाण बहुतायत में मिलता है। उदाहरण के तौर पर चौथी शताब्दी में महर्षि वात्स्यायन द्वारा लिखी गई 'कामसूत्र' में इस वर्ग के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है। प्राचीन भाषा संस्कृत में तीन लिंग (पुलिंग,

शोध सार

भारत एक विविधता युक्त समाज है। इन विविधताओं के बावजूद अन्य समुदायों के बीच एक अनोखी समानता एवं एकता भारत में सदैव विद्यमान रही हैं। जिसकी संस्कृति उदार हैं, क्योंकि भारतीय संस्कृति में प्रत्येक जीव जंतुओं को अपनाया गया है और सद व्यवहार की बात कही गई है। पशु–पक्षी तथा जीव–जंतु समेत हमारा समुदाय शारीरिक व मानसिक दिव्यांगों को अपनाता है, उसका लालन–पालन एवं पोषण करता। किंतु इंसान को मात्र लिंग भेद के कारण तृतीय लिंग (किन्नर) के लोगों को परिवार एवं समाज ने बहिष्कृत कर रखा है। जिनका जीवन अंधकारमय, संघर्षपूर्ण और कठिनाइयों से घिरा रहता है। जिसके कारण ही यह समुदाय आजीवन जन्म से मृत्यु तक स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का सामना करता रहता है।

मुख्य शब्द

तृतीय लिंग, स्वास्थ्य और संघर्ष.

तृतीय लिंग की अवधारणा

आज भी समाज दो ही लैंगिक संकल्पनाओं में जीता है जबकि इस मानव समाज के प्रारंभ से तीन लिंगों का वजूद रहा है जिसका ऐतिहासिक प्रमाण बहुतायत में मिलता है। उदाहरण के तौर पर चौथी शताब्दी में महर्षि वात्स्यायन द्वारा लिखी गई 'कामसूत्र' में इस वर्ग के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है। प्राचीन भाषा संस्कृत में तीन लिंग (पुलिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग) अंग्रेजी भाषा में (मेस्कुलीन, फेमिनिन एवं न्यूट्रल लिंग) की जानकारी मिलती है, किंतु हिंदी भाषा में केवल पुलिंग तथा स्त्रीलिंग की ही स्वीकृति है तीसरे लिंग को पूरी तरह अस्वीकार किया गया है। भाषा के इस अस्वीकार्यता के आधार पर समाज में द्विलिंगी संरचना

बनी हुई है।

तृतीय लिंग शब्द अंग्रेजी के थर्डजेंडर (Thirdgender) का हिंदी पर्याय है। तृतीयलिंग के लोक प्रचलित रूप किन्नर है। किन्नरों का इतिहास प्राचीन और संस्कृति गौरवशाली रहा है। किम्नर = किन्नर। इतना सुंदर, इतना आकर्षक, इतनी मधुरता का समावेश – क्या यह नर है? ''किम अहं नरः इति किन्नरः'' अर्थात् ऐसा पुरुष जिसको अपने पुरुष होने पर संदेह हो। क्या यह मनुष्य है?

किन्नर का शाब्दिक अर्थ 'देवताओं की एक योनि जिसका मुंह घोड़े के जैसा होना माना जाता है।' देवयोनि की जाति के रूप में पुरख्यानों में किन्नरों की कीर्ति गाथा संरक्षित है। ''देवयोनि '' शब्द का अर्थ है ' जिसमें देवतुल्य गुणों का कुछ समावेश है अर्थात् धनात्मक अनुजीवत (पॉजिटिव माईक्रोवाइटम) है। यह समुदाय देवयोनी (यक्ष, किन्नर, गंधर्व, विद्याधर, प्रकृतिलिंग, विदेहलीन और सिद्ध) है। इस लिए किसी दूसरे को हानि नहीं पहुचते। इस वर्ग समुदाय को किन्नर, मंगलामुखी, सखी, बीचवाला, मीठा, कोथी, हिजड़ा, उभयलिंग, शिखंडी, अरावनी, मॉगा, मामू, गूउ, कोज्जा, पवैया, सुखरा, ख्वाजासरा, तृतीय लिंग इत्यादि नामों से जानते है।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने 15 अप्रैल 2014 को दिए गए एक ऐतिहासिक फैसले में किन्नरों को एक विशिष्ट सांस्कृतिक वर्ग तृतीय लिंग (Transgender) की संज्ञा दी है। जबकि सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार ''जन्मतः लिंग के विपरीत मन और शरीर के साथ–साथ उसके व्यवहार के मिलन होने वाले व्यक्ति को तृतीयलिंग कहा है''। भारत सरकार सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति के अनुसार तृतीयलिंग समुदाय के मुख्य रूप से पांच उप वर्ग (हिजड़ा, जोगप्पा, ट्रांसवुमेन, ट्रांसमेन और कोथी) है।

भारत में सन् 1993 से तृतीय लिंग के मानवाधिकार के लिए संघर्ष प्रारंभ किया। यहां मानवाधिकार का संबंध मनुष्य का जीवन उसकी जनसंख्या समानता तथा समानता का अधिकार से है। लंबी लड़ाई के बाद सर्वोच्च न्यायालय ने 15 अप्रैल 2014 ई को इस समुदाय को तृतीय लिंग के रूप में समाज में ऐतिहासिक फैसला सुनाया। विश्व में ट्रांसजेंडर शब्द का प्रयोग सन् 1960 के दशक में किया गया और 1970 ई से शब्द निश्चित अर्थ में प्रयोग किए जाने लगा। जबकि वर्ष 1980 के दशक में इस शब्द का आशय बहुत व्यापक हुआ– जन्म से लिंग के विपरीत जीने वाले सभी लोगों का समावेश ट्रांसजेंडर्स (तृतीय लिंग) में किया गया।

'समाज' का अर्थ लोगों को एक साथ लेकर चलने का नाम है। विभिन्न वर्ग और समुदाय के सहयोग, संघर्ष एवं प्रतिस्पर्धा के माध्यम से समाज को स्थापित करते हैं। संघर्ष की इसी कड़ी में एक वर्ग तृतीय लिंग भी है। मनुष्य के नाते तृतीय लिंगी को भी पांच मूलभूत आवश्यकताओं (भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा और चिकित्सा) की आवश्यकता है, जिन्हें मानव के नाते बिना भेद–भाव के मिलना चाहिए। इन मूलभूत आवश्यकताओं में तृतीय लिंग के स्वास्थ्य भी एक ज्वलंत एवं संवेदनशील मुद्दा है।

आधुनिक समाज में तृतीय लिंग का स्वास्थ्य

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार– ''समग्र स्वास्थ्य का अर्थ सिर्फ बीमारी व दुर्बलता का होना नहीं है, अपितु समग्र स्वास्थ्य व्यक्ति की वह स्थिति है जब वह शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक आध्यात्मिक तथा सामाजिक रूप से बेहतर स्थिति में हो तथा व समाज व समुदाय के साथ अपना समायोजन आसानी से कर सके।''

जबकि हमारे समाज में एक काफी पुराने एवं प्रचलित कहावत है– ''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है'' जो शत् प्रतिशत सही है।

तृतीय लिंग समुदाय के खराब स्वास्थ्य एवं गंभीर बीमारियों के कई कारण है, जैसे– गरीबी, बेरोजगारी, स्वास्थ्य के नियमों के प्रति अज्ञानता, चिकित्सा सुविधाओं का अभाव एवं व्यापक बीमारियाँ। परंपरागत रूप से स्वास्थ्य से अभिप्राय निरोग शरीर से है।

तृतीय लिंग किशोरावस्था में जब मां, बहन तथा सगे संबंधी द्वारा स्वास्थ्य संबंधी जानकारियां दी जाती है उन समय में ही परिवार से बहिष्कृत कर दिए जाते हैं। परिवार और शिक्षा से दूर पेट के भूख को मिटाने के लिए पथ

से भटक जाते हैं। गंदी बस्तियों का सहारा लेकर जीवन अस्तित्व के लिए संघर्ष करते रहते हैं। जहां मलिन बस्ती में शुद्ध हवा, दूषित पानी तथा प्रकाश के अभाव में कई बीमारियां घर कर जाती है। वही कभी कलुषित, अल्पाहार एवं पौष्टिक आहार के अभाव में उनका स्वास्थ्य हमेशा गिरता जाता है। यौन कर्मी से जुड़े तृतीय लिंग गुप्त रोग और कभी ठीक नहीं होने वाला बीमारी एड्स एचआईवी के चपेट में चले आते हैं और समय से पूर्व काल कलवित हो जाते है।

महामंडलेश्वर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी अपनी आत्मकथा ''मैं हिजड़ा .....मैं लक्ष्मी'' में लिखी हैं, जब मैं 7 साल का था तब पहली बार मेरा यौन शोषण हुआ, पर कितने दिन, कितने सालों तक सहन करूंगा यह सब! वहीं दूसरी सोलापुर के कैथी परिवार से आने वाली अमृता सोनी ने 'जोश टॉक' के मंच से स्वीकार की है कि– मेरे साथ घर में आयोजित छोटा सुरुचि भोज (Party) में चाचा ने शराब पीकर यौन दुष्कर्म किया। तृतीय लिंग समुदाय में अधिकांश लोग बाल यौन शोषण के शिकार हो जाते हैं। अर्ध विकसित शरीर और अर्ध विकसित मानसिकता में यौन शोषण शिकार होने के कारण मानसिक रूप से संकोची हो जाया करते है।

यौन संक्रमण का कारण

तृतीय लिंग समुदाय के लोगों को एचआईवी व अन्य यौन रोग होने का खतरा बहुत ज्यादा होता है, जिसका कारण निम्नलिखित है:

1. विवाह (सुरक्षित यौन संबंध) की व्यवस्था नहीं होती।
2. नियमित व वफादार यौन साथी नहीं होते।
3. अशिक्षा व जागरूकता का अभाव।
4. यौन संक्रमण के प्रति उदासीनता और डॉक्टरों से झिझक।
5. बचपन में समलैंगिक हिंसा।

आधुनिक समाज में तृतीय लिंग आर्थिक, सामाजिक स्थिति और भीख मांगने के कारण वेश्यावृत्ति के लिए अभिशप्त है। जिस्मपरोशी के दलदल में गिर जाने के कारण एड्स पीड़ितों की समस्या बढ़ रही है। तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, व आंध्रप्रदेश में किन्नरों के एक अध्ययन से पत्ता चलता है कि वहाँ एचआईवी पीड़ित कुल जनसंख्या में 53 प्रतिशत किन्नर समुदाय के सदस्य है। जबकि यू एन ए के अनुसार– भारत में जो 2017 के आंकड़े है उसके मुताबिक 3.1 प्रतिशत हिजड़ें एचआईवी पोजेटिव है।

समुदाय के स्वास्थ्य का वर्गीकरण

अध्ययन के सुगमता हेतु इनके स्वास्थ्य को हम तीन वर्गो में विभक्त कर सकते है:

क) शारीरिक स्वास्थ्य – चोट और हिंसा।

ख) व्यवहार स्वास्थ्य – आत्महत्या, मानसिक स्वास्थ और मादक द्रव्यों का सेवन

ग) यौन स्वास्थ्य – यौन संक्रमित रोग (एचआईवी/एड्स) और अन्य संक्रमण रोग।

मैं हिजड़ा .....मैं लक्ष्मी आत्मकथा में लक्ष्मी त्रिपाठी लिखती है कि ''ठाणे के अस्पताल में अगर कोई हिजड़ा जांच के लिए गया तो उसे कोई हाथ नहीं लगाता था। ना डाक्टर्स, ना वार्डबॉय और ना दाई। हिजड़ो के साथ में बलात्कार और एचआईवी पोजेटिव होने पर जांच की प्रकिया में डॉक्टर्स (सरकारी/निजी) हाथ तक नही लगते।'' जबकि ज्यादातर डॉ. तो हिजड़ों को देखते ही नहीं। उन्हें डर लगता है कि यदि वे हिजड़ों का इलाज करेंगें तो और मरीज नहीं आएंगे।

सामान्य से लेकर के असाध्य बीमारियों का इलाज विशेषज्ञरोग, डॉक्टर या सरकारी अस्पताल में न करा कर निजी दवा दुकानों से ही दवा लेते हैं। लैंगिक भेदभाव, दुर्व्यवहार एवं उपहास के कारण एक सामान्य की तरह इलाज नहीं करा पाते हैं। देह व्यापार के कारण एचआईवी, एड्स तथा अन्य गुर्दा संबंधी असाध्य बीमारियों से ग्रसित

हो जाया करते हैं। सार्वजनिक स्थलों पर तृतीय लिंग के निजी शौचालय नहीं होने के कारण पेशाब संबंधी संक्रमण के शिकार हो जाते है। वही दूसरी ओर सरकारी एवं गैर सरकारी अस्पतालों में स्त्री एवं पुरूष की तरह तृतीय लिंग कक्ष सुनिश्चित नहीं होने के कारण मरीज हमेशा संकोच में रहती है कि हम किस कक्ष में स्वास्थ्य लाभ लें।

तृतीय लिंग के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मदद करने की बड़ी आवश्यकता है। जब यह सरकारी या गैर सरकारी अस्पताल पहुंचते हैं, तो डॉक्टर, कॉन्सिलरर्स तथा दवा व्यवसाई लोगों को आत्मिकता पूर्वक रोगी के नाते उन्हें मदद करना चाहिए। इनके स्वास्थ्य को लेकर लिए विश्व स्तर पर ''द वर्ल्ड प्रोफेशनल एसोसिएशन ट्रांसजेंडर्स हेल्थ (WPATH)'' संस्था काम कर रही है ।

सन् 2007 में किए गए एक समीक्षा के अनुसार 46 प्रतिशत तृतीय लिंग के साथ यौन शोषण, 36 प्रतिशत मौखिक अव्यवहार और 31 प्रतिशत लोगों को जान से मारने की धमकी दिया गया है। स्वास्थ्य केंद्रों में भी इनके प्रति भेदभाव देखने को मिलता है स्वास्थ्य प्रदाताओं को तृतीय लिंग के यौन संबंधी और उनकी समस्याओं पर प्रर्याप्त जानकारी नही होने के कारण हमेशा इस समुदाय को पक्षपात सहना पड़ता है। एचआईवी, तापसन, एंटी रेट्रोवाइस चिकित्सा एवं यौन संबंधित सेवाओं में भी अन्याय होने का प्रमाण प्राप्त हुआ है।

यह समुदाय मानसिक रोगों (तनाव, चिंता, अवसाद इत्यादि) के शिकार अधिक होती है जिसके कारण आत्महत्या और मादक द्रव्य व्यसन के शिकार हो जाते है। अध्ययनों से पत्ता चलता है कि तृतीयलिंग के समुदाय में आत्महत्या की प्रवृत्ति 38–65 प्रतिशत हो सकती है, जबकि 16–32 प्रतिशत लोगों ने आत्महत्या के तरफ तरफ के प्रयास किए थे। इस समुदाय में मादक द्रव्य व्यसन की उच्च दर पाई जाती है। कुछ अध्ययनों के अनुसार तंबाकू सेवन की दर 45–74 प्रतिशत तक हो सकती है, जबकि पान, सिगरेट, गुटका, शराब इत्यादि के सेवन का दर और उच्च हो सकता है।

सामान्य से लेकर के असाध्य बीमारियों का इलाज विशेषज्ञ रोग, डॉक्टर या सरकारी अस्पताल में न करा कर निजी दवा दुकानों से ही दवा लेते हैं। लैंगिक भेदभाव, दुर्व्यवहार एवं उपहास के कारण एक सामान्य की तरह इलाज नहीं करा पाते हैं। देह व्यापार के कारण एचआईवी, एड्स तथा अन्य गुर्दा संबंधी असाध्य बीमारियों से ग्रसित हो जाएगा करते हैं। सार्वजनिक स्थलों पर तृतीय लिंग के निजी शौचालय नहीं होने के कारण पेशाब संबंधी संक्रमण के शिकार हो जाते है।

यह कड़वी सच्चाई है कि तृतीय लिंग समुदाय के लोग स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव में आज असमय काल कल्वित हो जाते हैं। संकोची स्वभाव और लैंगिक भेदभाव के कारण चिकित्सा कराने में संकोच व्यक्त करते हैं। इनमें जेंडर आईडेंटिटी क्राइसिस के कारण अवसाद, डिप्रेशन, फ्रस्ट्रेशन और असहायता तथा पीड़ा जनित क्रोध भी पनपता है। जबकि हम सभी जानते है कि जेंडर आईडेंटिटी क्राइसिस कोई मानसिक रोग नहीं है। इसके बहुत से सरल उपाय चिकित्सा विज्ञान में मौजूद है– जैसे हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी, लेजर हेयर रिमूवल या एलेक्ट्रोलिसिस, सेक्स रि–असाइनमेंट थेरेपी, एसआरटी उपयुक्त चिकित्सा ट्रांस सेक्सुअल लोगों पर कारगर है, लेकिन ट्रांस क्वीर पर नहीं।

लिंग प्रत्यारोपण शल्य चिकित्सा

तृतीय लिंग समुदाय के मन और शरीर के भेद को खत्म करने के लिए लिंग प्रत्यारोपण सर्जरी बहुत ही महत्वपूर्ण है लेकिन जटिल और खर्चीला भी। विदेशों के साथ–साथ अब भारत के कई मेडिकल संस्थानों व अस्पतालों में यह सुविधा उपलब्ध है। भारत में दूसरा राज्य छत्तीसगढ़ (भीमराव अंबेडकर हॉस्पिटल एवं मेडिकल कॉलेज) जहाँ पर लिंग प्रत्यारोपण निःशुल्क उपलब्ध है।

लिंग प्रत्यारोपण सर्जरी के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दिशा निर्देश जारी किया गया है। जिस के प्रमुख चरण निम्नलिखित हैं:

1. काउंसलिंग

2. हार्मोन थेरेपी
3. सहमति पत्र
4. हेयर रिमूवल
5. स्तन की सर्जरी तथा हटाने की सर्जरी
6. लिंग परिवर्तन सर्जरी
7. स्वर यंत्र का वोकल कार्ड का सर्जरी
8. सर्जरी के बाद की प्रक्रिया।

इन प्रमुख चरणों के बाद तृतीय लिंग व्यक्ति अपने मन और शरीर के भेद को खत्म कर पाते हैं। इसे सरल शब्दों में कहें तो इस सर्जरी के माध्यम से महिला शरीर का रूपांतर पुरुष शरीर में तथा पुरुष शरीर का रूपांतर महिला के शरीर में होता है।

सुझाव

तृतीय लिंग समुदाय के स्वास्थ्य संबंधी एक गंभीर समस्या आधुनिक एवं सभ्य समाज में विद्यमान है। आज सुविधाविहीन समुदाय पर लेखन, विचार– गोष्ठी, कार्यशाला और शोध कार्य के गति को और तेज करने की नितांत आवश्यकता है। तृतीय लिंग समुदाय और डॉक्टर, नर्स और अन्य सेवा कर्मियों के बीच का जो खाई है, उसे कम किया जाए। इनकी शारीरिक संरचना को ध्यान में रखकर डॉक्टर को विशेष प्रशिक्षित कर विशेषज्ञ के रूप में बनाया जाए। सार्वजनिक स्थलों पर शौचालय और अस्पतालों में तृतीयलिंग के लिए निश्चित कक्ष बनाया जाए। मानसिक स्वास्थ्य के लिए मनोवैज्ञानिक डॉक्टर से निःशुल्क परामर्श एवं जांच का शिविर लगाया जाय साथ ही साथ द्रव्य व्यसन के बुरे प्रभाव पर सामाजिक जागरूकता लाने की जरूरत है। गैर सरकारी संस्थाओं को इन समस्याओं पर काम करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है कि समाज अपने आप को भले ही सभ्य या आधुनिक कह ले परंतु सोच परंपरागत और रूढ़िवादी ही है, क्योंकि लैंगिक भेदभाव के कारण सुविधावंचित वर्ग हाशिये पर खड़ा है। स्वास्थ्य की समस्या एक गंभीर समस्या है। डॉक्टर और सेवा कर्मियो के अमानवीय व्यवहार चिंतन का विषय है। इनकी स्वास्थ्य सुविधा को लेकर सभी लोगों को चिंतन मनन करना ही होगा। आज यह वर्ग भेदभाव और उपहास के कारण दवा दुकान से दवा लेकर काम चला रहा है। कई संक्रमित बीमारियों के चपेट में आने के कारण असमय काल के गाल में चले जा है। आज सुविधावंचित वर्ग के प्रति नजरिया बदलने की जरूरत है। रूढ़िवादी और परंपरावादी सोच के बजाय वैज्ञानिक सोच लाने की जरूरत है, तभी सभ्य और आधुनिक समाज का कल्पना भी संभव है। यह वर्ग नूतन समाज के मुख्यधारा में निरोग काया के साथ आनंदपूर्वक जीवन–यापन कर समाज को नई दिशा प्रदान करेंगे।

संदर्भ सूची

1. प्रसाद धर्मशीला, (1999), भारती समाजिक संस्थाएं, स्टूडेंट्स फ्रेंड्स, पटना।
2. त्रिपाठी लक्ष्मी, (2015), *मैं हिजड़ा ....मैं लक्ष्मी,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. लिल्हारे पायल, (2020), *हिंदी साहित्य में थर्ड जेंडर विमर्श,* वान्या पब्लिकेशंस, कानपुर।
4. पाठक विनय कुमार, (2019), *किन्नर –विमर्श दशा एवं दिशा,* भावना प्रकाशन, दिल्ली।
5. सिहाग नरेश, (2021), बोहल शोध मञ्जूषा किन्नर विमर्श, इतिहास, समाज एवं साहित्य के संदर्भ में।
6. मिश्रा कुमार गौरव, (2016), *जनकृति,* अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका अगस्त अंक –18,भाग –2।

7. रवीना बरीहा, (2019), तृतीय प्रकृति Type equation here. समाजकल्याण विभाग, छत्तीसगढ़।

8. Reback, C., Simon, P., Bemis, C., et al. (2001), The Los Angeles transgender health study. Community report. Los Angeles: University of California at Los Angeles.

9. Kenagy, G., (2005), The health and social service needs of transgender people in Philadelphia, *International Journal of Transgenderism*, 8(2/3) 49-56.

10. Kenagy, G. & Bostwick, W., (2005), Health and social service needs of transgender people in Chicago, *International Journal of Transgenderism*, 8(2/3),57-66.

11. Josh Talks : Story of Trans Govt- officer/Amruta soni (you tube video)

****